Volume: 1 Issue: 1 Pages: 104-106

International Journal of Research in Academic World

E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133

Received: 08/August/2021 Int. J Res. Acad. World. 2021; 1(1):104-106 Accepted: 15/September/2021

कथक नृत्य में योग का सौन्दर्य

*[1]डॉ. जितेश गड़पायले

*[1]सहायक प्राध्यापक, कथक नृत्य विभाग, नृत्य संकाय, इं.क.सं.वि.वि. खैरागढ, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

यह लेख कथक के नृत्त (शुद्ध नृत्य) पक्ष में योग और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के सौंदर्यशास्त्र के अंतर्निहित जुड़ाव की पड़ताल करता है। नृत्त को कथक की शुद्ध और मौलिक भाषा के रूप में वर्णित किया गया है, जो एक शाश्वत सौंदर्य को मूर्त रूप देता है जो नर्तक के शारीरिक रूप को अनंत से जोड़ता है।

प्रक्रिया श्थाटश (जेंश्ज) नामक प्रारंभिक अनुक्रम से शुरू होती है, जो एक मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक एकाग्रता को आरंभ करती है। छाती के सामने रखी गई अराल मुद्रा को ध्यान की योग मुद्रा के रूप में पहचाना जाता है जो एकाग्रता में सहायता करती है। साथ ही, स्थिर दृष्टि त्राटक (ज्तंजां) की तरह कार्य करती है, जिससे मस्तिष्क की पीनियल ग्रंथि (च्पदमंस ळसंदक) प्रभावित होती है। योग के अनुसार, यह ग्रंथि शरीर, मन और आत्मा का एकीकरण करती है।

ध्वनि और लय के साथ शारीरिक संचलन योग के तथ्यों को सहज रूप से शामिल करता है। कथक की सृजन प्रक्रिया का मूल शरीर, मन और बुद्धि के अनुशासित संरेखण में निहित है, जो अंततः स्वतंत्रता और रचनात्मक सौंदर्य की अभिव्यक्ति की ओर ले जाता है जो शारीरिक सीमाओं को पार करता है।

मुख्य शब्दः भाषा सौन्दर्य की बुनियादी आभा, सृजन का अनन्त आयाम रस का अखण्ड आनन्द, मुहावरे और समीकरण के माध्यम से शाश्वत मान्यता की स्थापना, सृजन के सूत्र का बंधना, वैविध्य रचना की पूर्णता।

प्रस्तावना

नृत्त अंग कथक की शुद्ध मौलिक भाषा है, यह कथक का स्वायत्त मुहावरा है देह के मूर्तन द्वारा (भाव द्वारा) अमूर्तता (भावहीन) की भाषा सौन्दर्य इसकी बुनियादी आभा है। यह सत्य व शिव के क्रम से जुड़ा शाश्वत सौन्दर्य है, जो नर्तक देह की सीमा को असीम से जोड़ता है व सृजन को अनन्त आयाम दे जाता है। यही कारण है कि नृत्तांग में सौन्दर्य का सुन्दरतम अनुभव व रस का अखण्ड आनन्द है, जहां पूर्व रचित भी नव सृजित है, क्योंकि हम कह सकते हैं कि सौन्दर्य व रस की कोई पुर्नरचना नहीं, यह नित नवीन होते चले जाने की अनुभूति है।

1. सृजन प्रक्रिया मूलतः मनोवैज्ञानिक व शरीर विज्ञान का विषय है।

उपनिषद की वाणी 'अथातो ब्रम्ह जिज्ञासा' में ही नृत्त के सौन्दर्य सृजन का प्रारम्भ है, जहां नए चिन्तन से नवीन सूत्रों का प्रतिपादन भी है, किन्तु नए मुहावरे का समीकरण भी शाश्वत मान्यताओं को ही रचता है, क्योंकि परम्परा ने प्रारम्भ से ही इन सबको समेटा है, आवश्यकता केवल इन रहस्यात्मक मुहावरों को भेदने की है। कथक की परम्परा को रखते हुए नए चिन्तन से इसके सृजन को और अधिक रचनात्मक गहनता दे सकते हैं। कथक ने अनेक कलात्मक सूत्रों द्वारा सृजन को अंजाम दिया है, सूत्र से बंधकर ही कलाकार अंक व शब्दों के अनेक भेद अभिनय द्वारा खोलता है। यहां बन्धन एवम् अनुशासन ही सृजन की स्वतंत्रता व मुक्ति का पथ है। कथक की रचनात्मक अभिव्यक्ति में कलाकार कई द्वन्दों, कई युग्मों, वैविध्य व सामंजस्य से गुजरती है। शब्द, अंक, ध्वनि, गीत, स्थिरता, रेखा, भंगिमा, मुद्रा, प्रतीक, सृजन का कलात्मक इकाईयाँ है, इनमें चाहे जिसमें डूबकर गहन निकटता पाकर कलाकार मौलिक सृजित कर पाता है। यहां युग्म है स्थिरता व गतिशीलता के लय, ताल के, मूर्त व अमूर्त के, भाव व भावहीन के, मुद्रा व प्रतीक के, अंक व शब्द के, पवित्रता व इन्द्रियता के, आध्यात्म व श्रृंगार के, चाहे जिसमें भी डूबकर कलाकार मौलिक सृजित कर पाता है।

2. कला का संबंध स्वयं प्रकाश्य ज्ञान या सहजानुभूति ही

यहां तन ही नहीं मन की अदृश्य परतों तक उतरकर सौन्दर्य की छानबीन व कल्पना का विस्तार आवश्यक है। कथक के सम्पूर्ण शास्त्र में विविधता है, जो इसे प्रतिभा के

*Corresponding Author: डॉ. जितेश गड़पायले

नए स्त्रोतों से जोड़ती है। यहां शास्त्र की गहनता, प्रतिभा का विकास, परम्परा की प्रेरणा व शुद्धता व कल्पना के पूर्ण अवसर हैं।

3. नये विचार तथा सही विचार के सृजन के लिए नये मनुष्य की दीक्षा पहली शर्त हैं।

नृत्तांग में किए जाने वाली सबसे प्रारम्भिक प्रक्रिया है 'थाट' यहीं से अर्न्तसम्बन्ध की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

4. प्रतिक्रिया में क्रियात्मक गठन, भाषा गठन और आंतरिक गठन सभी प्रतिक्रिया करते है।

आचार्यों द्वारा बताए इसके सैद्धांतिक सूत्रों से ही नए सूत्र, नए मुहावरे रचने का प्रयास किया गया है।

अभिनय दर्पण में आचार्य नन्दिकेश्वर ने इसमें 'भावाभिनयहीनं तु नत्तभित्याभिधीयते' का सिद्धांत बताया व आचार्य धनंजय ने श्नृत्तं ताल लयाश्रयम्श कहा तथा दोनों ही सिद्धांत आंगिक अभिनय की कलात्मकता व सृजन की अनन्त क्षमता से युक्त है, इनमें लय, ताल, के साथ दृश्य व श्रव्य का ऐसा सौन्दर्य निहित है, देह के मूर्त द्वारा अमूर्त की ऐसी रचनात्मक अभिव्यक्ति है जो कलाकार को शारीरिक ही नहीं बौद्धिक व मानसिक सौन्दर्य से संस्कारित करती है। आचार्य भरत के अनुसार इसकी उपयोगिता है ''अभिनय के साथ इसका प्रयोग इसीलिए आवश्यक है क्योंकि यह शोभा का उत्कर्ष है।'' नृत्त पक्ष एक तरह से भाव अभिव्यक्ति की पूर्व भूमिका है, क्योंकि यह भाव अभिव्यक्ति से पूर्व देह, मन व बुद्धि को एकाग्रता तल्लीनता व सचेतनता देती है, जिससे वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक सूत्र इनमें शामिल हैं, ध्वनि व लय के मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक व ईश्वरीय अनुभूति के सूत्र इनमें शामिल हैं।

5. कल्पना कलाकार की मानसिक सृजन शक्ति है। इससे कलाकार को नूतन सृजन व अभिनव रूप व्यापार विधान की शक्ति प्राप्त होती है।

आचार्य नन्दिकेश्वर के अभिनय दर्पण में 'यतो हस्तस्ततो दृष्टिर्यतो' का सूत्र दिया है जहां हाथों के संचालन से दृष्टि को बांध कर एकाग्र किया है, जो अन्त में 'मन' को बांध लेती है। और यह प्रक्रिया नृत्त अंग द्वारा ही प्रारम्भ हो जाती है जो नर्तक पर एकाग्रता के लिए मनोवैज्ञानिक असर डालती है। प्रथम समपाद की स्थित नृत्त को दार्शनिक वलय प्रदान करती है।

6. नृत्य के बीच में जिन परनो का प्रयोग किया जाता है वे सभी योग के रूप में आज भी प्रचलित है।

ध्वनि व लय के संवेग, मनोवैज्ञानिक व वैज्ञानिक असर डालते हैं क्योंकि ये योग के तथ्यों को लिए चलते हैं, योग नृत्त अंग की आंगिक रेखाओं व गतियों में स्वतः स्फूर्त शामिल है, अतः एक सूत्र योग द्वारा भी नृत्त अंग की सार्थकता को सुलझाता है। नृत्त अंग के प्रारम्भ से ही योग की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। वक्ष के समक्ष रखी गई अराल मुद्रा, योग की ध्यानस्थ मुद्रा है जो एकाग्रता प्रदान करती है, दृष्टि प्रारंभ से ही त्राटक की भांति स्थिर होती है व मस्तिष्क के साथ दृष्टि की यक एकाग्रता से पीनियल ग्रन्थि प्रभावित होती है, योग के अनुसार यह ग्रन्थि शरीर, मन व आत्मा का एकीकरण करती है। इस तरह ऐसे सूत्र शामिल हैं जो नृत्त के प्रारम्भ से ही नर्तक के साथ सकारात्मक समीकरण स्थापित करते हैं।

7. नृत्य की समस्त प्रक्रिया के लिए, मन की एकाग्रता आवश्यक है जो मनोवैज्ञानिक तथ्य लिए हुए है।

थाट की कलात्मक प्रक्रिया में कई ऐसे ही सूत्र शामिल है जो योग व मनोविज्ञान को लिए चलते हैं। थाट द्वारा ही नृत्त अंग के व्याकरण की लय का अर्न्तमन से जुड़ाव होता है।

8. एक इन्द्रिय की प्रतिक्रिया से शरीर में सहानुभूति पूर्ण क्रम होने लगता है, कुछ भावात्मक प्रवृत्तियाँ होती है।

यहां सम्पूर्ण इन्द्रियां सूत्रबद्ध होती है, यहीं से बाह्य सृजन का आंतरिक नैसर्गिक प्रक्रिया से अर्न्तसम्बन्ध होता है। यहीं से देह मन व बुद्धि नृत्त पक्ष के लिए प्रस्फुटित होने लगते हैं। दृष्टि की एकाग्रता के साथ 'मसक' की सैद्धांतिक क्रिया से श्वांसों का लयात्मक संचालन से कलाकार अर्न्तजगत में प्रवेश करता है।

9. आकार अथवा उसका पर्यायवाची शब्द रोस्टाल्ट का जर्मन भावा में पूर्ण एवं समष्टि अर्थ है

दृष्टि, हृदय व मस्तिष्क इसी के द्वारा एक सूत्र में बंध जाते हैं व कलाकार बाह्य व अर्न्तरूप से एकीकरण करता है, मनुष्य की आन्तरिक सर्जना प्रणाली के अनुसार भी मस्तिष्क से हृदय सूक्ष्म ज्ञान तन्तुओं से सम्बन्धित है। व इनकी आन्तरिक प्रक्रिया आपस में सम्बद्ध है तथा मस्तिष्क व हृदय के अर्न्तसम्बन्ध से उपजी भावों की जीवन्तता स्वतः नेत्रों में समाती है क्योंकि नेत्र भी सूक्ष्म ज्ञान तन्तुओं के द्वारा मस्तिष्क से सम्बन्धित है। नृत्त अंग में इसीलिए दृष्टि की जीवन्तता भावहीन नहीं होती, यह मुख राग के साथ एक नैसर्गिक सौन्दर्यपूर्ण भाव लिए होती है, यही नहीं नृत्त अंग में दृष्टि के अंदाज भिन्न–भिन्न हैं। थाट सम बोलों की निकासी में इसकी स्थिरता व चंचलता अद्भुत माधुर्य लिए होती है। दृष्टि की तरलता इसीलिए नृत्त अंग की संरचना को हस्त अभिनय की कमनीयता के साथ कुछ आर्द व नम बना जाती है।

10. मन चेतना की दशाओं का क्रम मात्र, जिनमें प्रत्यय व विचारों का प्रवाह लहरों की भाँति होता है।

थाट से कसक मसक व कटाक्ष के कलात्म्क सौन्दर्य के साथ ही धीरे धीरे हस्त व पादाभिनय का सहज संतुलन व कलात्मक स्थिरता धीरे–धीरे गति का प्रारम्भ करती है। यहीं से आन्तरिक प्रक्रिया के साथ ध्वनि व लय का वैज्ञानिक व आध्यात्मिक प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है। लय वस्तुतः कथक संरचना का प्रारम्भ व अंत है।, यह न सुखात्मक होती है न दुखात्मक यह चित्त की मुक्तावस्था

है, जिसमें राग द्वेष व उनसे उत्पन्न हर्ष विषाद की चेतना निःशेष हो जाती है। यहां लय की ऐसी तरंगें व लहर हैं, जहां आनन्द के अलावा कुछ नहीं और आनन्द भी भाव की परिणति है, अतः नृत्त अंग की सैद्धांतिक भावहीनता का यहां भावपूर्ण सौन्दर्य है।

निष्कर्ष

जहां कथक का प्रारम्भ थाट की स्थिरता देह का कलात्मक व रचनात्मक सौन्दर्य है, व नृत्य रचना की सम्पूर्ण गति यहीं से करवटें लेती बह जाने को आतुर होती है, वहीं तत्कार पाद संचालन की ऐसी लय की गतिशीलता व तालबद्धता का देह की स्थिरता का उदाहरण है जहां से रचना आकार भी लेती है व अन्त में समस्त आंगिक अभिनय सिमटकर उसी में समा अपना अस्तित्व मानो ध्वनि में विलीन कर श्रव्य सौन्दर्य का आलेखन करते हैं।

हस्त अभिनय भी नृत्त अंग में महत्वपूर्ण है, यह नृत्य आलेखन की वर्णमाला में शामिल एक जीवन्त अक्षर है, हाथों के लयात्मक संचालन के साथ पांच अंगुलियों का कम्पन व मुद्राओं का संसार कई रहस्य उद्घाटित करते हैं, जिनमें योग आध्यात्म के रहस्य छिपे हैं। इस तरह नृत्त अंग में रेखा गणित, अंक गणित एवम् अभिनय के साथ योग व विज्ञान के सौन्दर्य का रचना संसार है। अर्थहीन बोल व मुद्राएं, बुद्धि चातुर्य से जुड़ी तन, मन की तन्मयता व सजगता लिए अनेक अर्थों को सुलझाती है। इस तरह नृत्त अंग के मौन में ऐसा मुखर अंदाज है जहां ह्रदय के साथ–साथ बुद्धि की कुछ अधिक सक्रियता है, यहां मस्तिष्क की समस्त ग्रन्थियां खुल जाती है, जो एक साथ तन मन को विभोर कर जाती है। नृत्त अंग कलाकार के अन्तर्मन की समस्त दैहिक, मानसिक व सांसारिक कुंठाओं, वेदनाओं से मुक्ति का उच्छवास है। यही नहीं कलात्मक व रचनात्मक सौन्दर्य की सौन्दर्य मूलक इकाईयां यहां शामिल हैं। आंगिक अभिनय का अप्रतीम सौन्दर्य है, बुद्धि के साथ शारीरिक सौन्दर्य का अनन्त सृजन है, जो देह की सीमा को सीमातीत कर जाते हैं। दृश्य के साथ यहाँ श्रव्य का सौन्दर्य भी सुना व आलेखित किया जाता है। न जाने यहां कितने सूत्र बिखरे हैं जिन्हें सुलझाना व कलात्मक रचित करना है, यह कथक के नृत्तांग का एक चिंतन है जिसे प्रयोग धर्मिता द्वारा ही रचित किया जा सकता है, प्रयोग एक ऐसी सार्थक रचनात्मक सर्जना है जहां कब, कैसे व क्या सृजित हो जाए कहा नहीं जा सकता।

अथातो ब्रम्ह जिज्ञासा– इस उपनिषद वाणी से जिज्ञासा में ही कला की अनन्त सृजनशीलता है, जिज्ञासा कथक के सौन्दर्य की तृप्ति भी है, किन्तु अतृप्ति भी और यही अतृप्ति कथक सर्जना के नए रहस्यात्मक, अनदेखे सौन्दर्य को भेदती है। सौन्दर्य जहां किसी भी कला को पूर्णता देती है वहीं इसकी पिपासा को भी बनाए रखती है, सौन्दर्य की इस चर्चा में मुझे नाजिम हिकमत की पक्तियाँ स्मरण हो आई हैं कि श्सुन्दरतम् सागर है वह जिसे देखा नहीं हमने, सुन्दरतम् बच्चा बड़ा हुआ नहीं अभी तक। सुन्दरतम् दिन अपने वे हैं, जिन्हें जिया नहीं अभी हमने। और वे बेपनाह उम्दा बातें, जो सुनाना चाहता हूँ तुम्हें मैं, अभी कही जानी है।

कथक की सौन्दर्य सर्जना में बहुत कुछ रचा जाना अभी बाकी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा पृ.क्र. 199 श्री रमेश कुन्तल मेघ।
2. डॉ. नागेन्द्र, शोध व सिद्धान्त, पृ.क्र. 338।
3. श्री रमेश कुन्तल मेघ, साक्षी है सौन्दर्य प्राश्निक, पृ.क्र. 379।
4. श्री रमेश कुन्तल मेघ, अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा, पृ.क्र. 200।
5. श्री विमल कुमार, सौन्दर्य शास्त्र के तत्त्व, पृ.क्र. 211।
6. श्रीमती रोहिणी भाटे, कथक प्रसंग लेख जयपुर घराना, पृ.क्र. 147।
7. श्री देवेन्द्र कुमार विद्यालंकार, फ्रायड मनोविश्लेषण, पृ. क्र. 46।
8. श्री क्रांति चन्द्र पाण्डेय, स्वतंत्र कला शास्त्र, पृ.क्र. 224।
9. डॉ. ईश्वर चन्द्र शर्मा जेतली, सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा, पृ.क्र. 32।
10. डॉ. लक्ष्मी शुक्ल, भारतीय मनोविज्ञान सांख्य एवं योग की पृष्ठभूमि में, पृ.क्र. 49।।